मेरी कविताएं मानो शब्दों में व्यक्त आंसू की बूंदें हैं : प्रतिभा शतपथी

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के कविसंधि में प्रख्यात ओड़िआ कवयित्री प्रतिभा शतपथी ने अपनी कविताएं और रचना-प्रक्रिया साझा की। उन्होंने कहा कि कविता से मेरा लंबा संबंध है और यह मुझे बचपन में प्रकृति प्रेम के चलते प्राप्त हुआ। आगे चलकर सरला दास जैसे अनेक वरिष्ठ लेखकों को पड़कर मैंने अपनी काव्य-यात्रा को हमेशा परिष्कृत किया। मेरी कविता में मेरे सच्चे अनुभव, सुख-दुख और समाज की विकृत सच्चाइयां प्रतिबिंबित होती हैं। मेरी कविताएं मानो शब्दों में व्यक्त आंसू की बूंदे हैं। मेरी कविताएं निरंतर परिवर्तन का प्रतीक हैं। हर कवि की तरह मेरे लिए भी कविता अंतहीन प्रयास है। एक तपस्या है बिना किसी लाभ की आशा किए। अपनी कविताओं से मैं स्वयं को पृथ्वी से जुड़ा महसूस करती हूं। उन्होंने अपनी कुछ कविताएं मूल ओड़िआ में पढ़ी और उसके बाद कुछ अनूदित कविताएं हिंदी और अंग्रेजी में प्रस्तुत कीं। कुछ अंग्रेजी कविताओं के शीर्षक थे, जस्ट लाइक अर्थ तथा नो वर्ड्स इन पर्टिकुलर आदि।

कार्यक्रम के अगले चरण में उनकी कविताओं के हिंदी अनुवाद लीलाधर मंडलोई, राजेंद्र प्रसाद मिश्र और पारमिता शतपथी ने तथा अंग्रेजी अनुवाद यशोधारा मिश्र,वी. भूमा आदि ने प्रस्तुत किया।